बीसवीं शताब्दी के रामकथाश्रित नाटकों में धर्म–दर्शन एवं समाज

संस्कृत विषय में पी-एच.डी. की उपाधि हेतु
शोध– प्रबन्ध की रूपरेखा।

2015

शोध निर्देशिका
डॉ0 अनीता असिस्टैन्ट प्रो0
संस्कृत विभाग कला संकाय,
डी0ई0आई0 दयालबाग, आगरा।

शोधार्थिनी
कु0 अर्चना

संकाय प्रमुख एवं विभागाध्यक्ष
प्रो0 (श्रीमती) रागिनी रॉय
चित्रकला विभाग, कला संकाय

विभागाध्यक्ष
प्रो0(श्रीमती) उर्मिला आनन्द
संस्कृत विभाग, कला संकाय

अध्ययन का क्षेत्र– आधुनिक संस्कृत नाटक

दयालबाग शिक्षण संस्थान(डीम्ड यूनिवर्सिटी), दयालबाग,
आगरा–282005

अनादि प्रकृति के अन्तस् में निहित, कण–कण में झंकार उत्पन्न कर देने वाला तथा मानव मात्र को आनन्दित करने वाला नाटक, सदा–सर्वदा से सर्वप्रिय रहा है। सुख एवं दुःख दोनों में ही आनन्द की अनुभूति करा देने वाली विधा का नाम नाटक है–

'दशरूपकेषु आनन्दनिस्यन्दिषु'– (दशरूपकम् 1/6)

यद्यपि प्रकृति प्रदत्त प्रत्येक पदार्थ की गतिशीलता में नाटकीयता है, तथापि भारतीय परम्परानुसार एक विधा के रूप में नाटक की उत्पत्ति त्रेतायुग में ब्रह्माजी के द्वारा की गई। 'नाटक' शब्द की व्युत्पत्ति 'नट्' धातु से 'ण्वुल्' प्रत्यय करके हुई है, जिसका अर्थ–स्वांग, रूपक तथा अनुकरण इत्यादि है। नाट्य का अर्थ है 'नट' का भाव या कर्म–

'अवस्थानुकृतिर्नाट्यम्' – (दशरूपकम् 1/1)

निःसन्देह नाटक मानव के विचारों का रुचिर दर्पण है। सम्भवतः इसी लिए विद्वानों ने नाटक को काव्य में अत्यन्त रमणीय बताया है–

'काव्येषु नाटकं रम्यम्'– (अभिज्ञानशाकुन्तलम् पृ0सं0 264)

नाटक प्रकृति प्रदत्त मनोरंजक वस्तु है और उसमें संस्कृत नाटक तो साहित्य का उच्चगिरि श्रृंग है। सबके मन को आनन्द विभोर कर देने वाले नाटक को आचार्य विश्वनाथ ने दो प्रकार से परिभाषित किया है–

'दृश्यं तत्राभिनेयम्' –(साहित्य दर्पण 6/1) तथा

'तद्रूपारोपातु रूपकम्' –(साहित्य दर्पण 6/1)

साहित्य की सर्वाधिक सुकुमार एवं आनन्ददायिनी विधा नाटक अपने आरम्भिक काल से ही 'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय' की प्रवृत्ति से प्रेरित होने के कारण सर्वजनप्रिय रही है। दर्शकगण बड़ी रोचकता तन्मयता एवं आत्मीयता के साथ नाटक

का रसपान करते हैं। साधारणीकरण कराने की सामर्थ्य सर्वाधिक होने के कारण ही नाट्क संसार की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा रही है।

धर्म–

भारतीय समाज आरम्भ से ही धर्म प्रधान रहा है और यहाँ का प्रत्येक व्यक्ति धर्म–मर्यादा में बँधा हुआ है। वेद के मूल में भी धर्म ही है। धर्म मनुष्य को विधि–विधानों एवं संस्कारों से अनुप्रेरित करता है। मनुष्य की भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति के मूल में धर्म है। वस्तुतः धर्म एक सामूहिक जीवन प्रणाली का नाम है।

'धर्म' शब्द 'धृ' धातु एवं 'मन्' प्रत्यय के योग से बना है। धर्म का अर्थ है– पालन करना या रक्षा करना।

'ध्रियते लोकोऽनेन इति धर्मः'

अर्थात लोक जिसे धारण करता है, वही धर्म है।

ऋग्वेद में धर्म क्रिया–संस्कारों के रूप में प्रदर्शित है। अथर्ववेद में 'धर्म' शब्द का अर्थ लौकिक आचार द्वारा मिलने वाला पुण्य बताया है तथा तैत्तिरीयोपनिषद् में सत्य बोलना ही धर्म बताया गया है–

–'सत्यं वद, धर्मं चर' –(तैत्तिरीयोपनिषद् 7/12)

धर्म के विषय में गीता में श्रीकृष्ण ने कहा है, कि जब–जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है। तब–तब ईश्वर अपने रूप को रचते हैं– अर्थात् साकार रूप में लोगों के सम्मुख प्रकट होते हैं–

''यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

–(गीता 4/7)

गीता में श्रीकृष्ण ने कहा है कि साधु पुरुषों के उद्धार के लिये पापकर्म करने वालों का विनाश करने के लिए और धर्म–रक्षार्थ मैं युग–युग में प्रकट हुआ करता हूँ–

"परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे"।।

–(गीता 4/8)

दर्शन–

दर्शन के द्वारा ही वस्तु का सत्य व तात्त्विक स्वरूप देखा जा सकता है। मनुष्य की सहज जिज्ञासा से उत्पन्न अनेक प्रश्नों के उत्तर देकर उसे संतुष्ट करने का कार्य दर्शन ही करता है। मानव एक बुद्धिजीवी प्राणी है। उसमें विचार शक्ति एवं विवेकशीलता का बल है। दर्शन बुद्धि का विषय है। बुद्धि की भिन्नता के कारण ही प्रत्येक व्यक्ति का जीवन जीने का ढंग अलग होता है।

'दर्शन' शब्द मूल रूप से संस्कृत भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है– देखना। 'दर्शन' शब्द 'दृश्' धातु से 'ल्युट्' प्रत्यय करने पर बना है। 'दृश्' धातु का अर्थ भी देखना है। यह देखना चर्म–चक्षुओं अथवा आँखों का देखना नहीं है। यह देखना मन और बुद्धि का देखना है। इस आधार पर 'दर्शन' शब्द का अर्थ चिन्तन करना, मनन करना तथा विवेचन करना इत्यादि निकलता है।

सामान्य रूप से भारतीय दर्शन दो भागों– आस्तिक और नास्तिक में विभाजित किया गया है। जो दर्शन वेदों और ब्राह्मण ग्रन्थों को प्रमाण नहीं मानते, उन्हें नास्तिक कहा जाता है। आस्तिक दर्शन के छः भेद हैं–

न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदान्त। नास्तिक दर्शन तीन हैं– चार्वाक, बौद्ध और जैन दर्शन।

समाज–

प्रकृति द्वारा प्रदत्त व्यक्तियों का समूह ही समाज कहा जाता है। जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त व्यक्ति समाज में रहता है। मनुष्य के लिए समाज स्वभाविक एवं अनिवार्य संगठन है। जब व्यक्ति जन्म लेता है तो वह समाज का सदस्य बनकर ही आता है। मनुष्य अपने स्वभाव व स्वाभाविक आवश्यकताओं के कारण सामाजिक प्राणी है। समाज के बिना व्यक्ति की कल्पना नहीं की जा सकती है। समाज का संगठन प्रभुत्व पर आधारित होता है।

समाज शब्द की उत्पत्ति 'सम्' उपसर्गपूर्वक 'अज्' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है– मनुष्यों का समुदाय। समुदाय शब्द से पारस्परिक जागरूकता और आदान–प्रदान की क्रियाओं का बोध होता है। व्यक्ति के बिना समाज और समाज के बिना व्यक्ति अधूरा है।

मैंने कई शोध–ग्रंथों एवं पुस्तकों का अध्ययन किया है परन्तु अब तक 'बीसवीं शताब्दी के रामकथाश्रित नाटकों में धर्म–दर्शन एवं समाज' विषय पर मेरी दृष्टि में कोई कार्य नहीं हुआ है। इस विषय पर भी शोधकार्य होना चाहिए यह विचार कर मैंने 'बीसवीं शताब्दी के रामकथाश्रित नाटकों में धर्म–दर्शन एवं समाज' विषय को अपने शोध का क्षेत्र चयनित किया है। रामकथाश्रित नाटक एवं कहानी मुझे बचपन से ही बहुत रुचिकर लगते हैं। रामकथा मुझे हमेशा से ही सद्कार्य के लिये उत्प्रेरित करती रही है। शायद इसी लालसायुक्त जिज्ञासा ने मुझे रामकथाश्रित नाटकों पर शोध हेतु प्रेरित किया है। लालित्य एवं भाव प्रवलता में शिखरस्थ विधा ने मुझे आरम्भ से ही हर्षित एवं आकर्षित किया है। नाटक में निहित अनुभूति की प्रबल सघनता और भाव प्रवणता ने आधुनिक संस्कृत नाटकों के अध्ययन हेतु प्रेरित किया। बीसवीं शताब्दी के रामकथाश्रित नाटकों में सीताभ्युदयम्, उन्मतराघवम्, प्रशान्तराघवम्, कैकेयीविजयम्, मध्यमरामचरितम्, शम्बूकाभिषेकम्, स्नेह–सौवीरम्, अभिनवहनुमन्नाटकम् तथा सेतुबंधनम् इत्यादि नाटक अत्यन्त रोचक है, जिनमें

विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों को आधार बनाकर अत्यन्त सुन्दर नाट्य रचना की है।

यथा सीताभ्युदयम् का एक उदाहरण दृष्टव्य है जिसमें राम का दैव वर्णित है–

''भवतः स्वीयकृतकृत्यता सर्वथा साधु, इति अर्ध सत्यमेव विभाति किन्तु, खलु रामस्य जीवन वैधुर्यमपि भवता, मनसि कृतम्। तत् शृणोतु भवान्, तस्य पुरोहित– मुखाद भाविविपत्ति–प्रतिसंहाराय। आजन्म कण्टं कण्टं महाकण्टं ललाटे भवता लिखितं रामस्य''।।

–(सीताभ्युदयम् पृ0सं0 4)

रामकथाश्रित नाटक प्रशान्तराधवम् में सीता की भाग्य–गरीबी वर्णित है–

''लोको निन्दति चेद् विदेह दुहितामङ्गीकरोम्य जसा
निर्दोषां विजहामि चेदवनिजां स्वात्मैव मां निन्दति।
निन्दाऽन्तश्च बहिश्च हा प्रभवति प्राणोत्ससन्तापिनी
संघर्षे पतिभूपयो– रघुपतिः कस्यैकपक्षं श्रयेत्।।

–(प्रशान्तराघवम् 1/13)

दयालबाग शिक्षण संस्थान के संस्कृत विभाग कला संकाय की प्राध्यापिका डॉ0(श्रीमती) अनीता जी के परामर्श एवं कुशल निर्देशन से मुझे प्रबल बौद्धिक बल एवं चरैवेति–चरैवेति का अमर सम्बल दिया है।

इस कार्य की सफल सम्पन्नता हेतु सर्वप्रथम में उस असीम एवं अनादि सत्ता के प्रति अपना आभारपूर्ण निवेदन निवेदित करती हूँ कि वह इसे सहज समाप्ति तक पहुंचाकर मुझ पर असीम कृपा बनाये रखें। इसके पश्चात् मैं अपने विभाग की विभागाध्यक्षा डॉ0 (श्रीमती) उर्मिला आनन्द एवं अन्य सुधी प्राध्यापकगणों का सहयोगार्थ धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ। तत्पश्चात् अपने पिताश्री श्री हरीसिंह तथा माताजी श्रीमती धनदेवी का सहृदय से आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने मुझे इस कार्य हेतु अपना सतत सहयोग प्रदान किया है। मैं उनकी चिरऋणी रहूँगी। एक बार पुनः उस अनादि शक्ति के श्री चरणों में असीम निवेदन निवेदित करते हुए शिरोमणि

विद्वज्जनों से आग्रहपूर्ण विनम्र निवेदन एवं उत्कट अपेक्षा है कि सहृदय सुधिजन मुझे ‘बीसवीं शताब्दी के रामकथाश्रित नाटकों में धर्म–दर्शन एवं समाज’ विषय पर मुझे शोधकार्य करने की अनुमति प्रदान कर अनुगृहीत करेंगे तथा क्षमाभाव से त्रुटियों को सुधारकर, मेरा सत्मार्गदर्शन करेंगे।

बीसवीं शताब्दी के रामकथाश्रित नाटकों में धर्म- दर्शन एवं समाज

अध्याय विभाजन

भूमिकाः 1 (क) शोध का शीर्षक एवं विषय

(ख) शोध-विषय की प्रासंगिकता

(ग) शोध-दृष्टि

2. प्रकृत विषय पर अब तक हुए अनुसंधानों का अवलोकन

प्रथम अध्याय- आधुनिक संस्कृत नाटकः स्वरूप एवं परम्परा

1. संस्कृत नाटकः लक्षण एवं स्वरूप
2. संस्कृत नाटक परम्परा
3. बीसवीं शताब्दी के रामकथाश्रित नाटक एवं नाटककारों का परिचय

अध्येय नाटकों की सूची-

	नाटक	**नाटककार**
1.	कैकेयी-विजयम्नाटकम्	रामजी उपाध्यायः
2.	प्रशान्तराघवम् नाटकम्	मिश्रोऽभिराजराजेन्द्रः
3.	सीताभ्युदयम् नाटकम्	रामजी उपाध्यायः
4.	मध्यमरामचरितम् नाटकम्	कृपाराम त्रिपाठीः
5.	अभिनवहनुमन्नाटकम्	आचार्य रमेशचंद शुक्लः
6.	शम्बूकाभिषेकम् नाटकम्	रामजी उपाध्यायः
7.	स्नेह- सौवीरम्	डॉ0 भास्कराचार्यः त्रिपाठी
8.	उन्मतराधवम् नाटकम्	डॉ0 अरूणा शर्मा
9.	श्रीराधवाभ्युदयम्	स्वामी रामचन्द्राचार्य

10. सेतुबंधनम् बलभद्रप्रसाद गोस्वामी

इत्यादि

द्वितीय अध्याय–बीसवीं शताब्दी के रामकथाश्रित नाटकों का नाट्यशास्त्रीय दृष्टि से अध्ययन

1. अध्येय नाटकों की कथा वस्तु –योजना तथा उसकी वाल्मीकि रामायण, कम्बु रामायण और रामचरितमानस की कथा से तुलना
2. अध्येय नाटकों की पात्र–योजना एवं चरित्र–चित्रण
3. अध्येय नाटकों में रस–योजना
4. अध्येय नाटकों में संवाद योजना

तृतीय अध्याय– अध्येय नाटकों का रंगमंचीय दृष्टि से अध्ययन

1. संवाद–योजना की दृष्टि से अध्ययन
2. भाषा–शैली की दृष्टि से अध्ययन
3. अभिनय की दृष्टि से अध्ययन

चतुर्थ अध्याय– अध्येय नाटकों में धर्म–दर्शन का स्वरूप

1. बीसवीं शताब्दी में धर्म–दर्शन की अवधारणा
2. अध्येय नाटकों में वैष्णव धर्म–दर्शन के सिद्धान्त
3. अध्येय नाटकों में देवतावाद एवं अवतारवाद
4. अध्येय नाटकों में भक्ति का स्वरूप
5. अध्येय नाटकों में वर्णित सगुणोपासना

पंचम अध्याय– अध्येय नाटकों का सामाजिक दृष्टि से अध्ययन

1. अध्येय नाटकों में वर्णित समाज

(क) अर्थ

(ख) राजनीति

(ग) शिक्षा एवं नारी की स्थिति

2. अध्येय नाटकों में वर्ण एवं जाति–व्यवस्था

3. तत्कालीन समाज में आचार–विचार

4. अध्येय नाटकों में वर्णित जीवन–मूल्य

षष्ठ अध्याय–अध्येय नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन

1. वस्तु–योजना की दृष्टि से

2. पात्र– योजना की दृष्टि से

3. संवाद– शैली की दृष्टि से

उपसंहार–

अध्ययन का निष्कर्ष एवं वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता

संदर्भ ग्रन्थ सूची

क्र. सं.	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशन
1	अभिज्ञान–शाकुन्तलम्	श्रीकालिदास प्रणीतम्	महालक्ष्मी प्रकाशन आगरा, नवीनतम संस्करण
2	स्नेह–सौवीरम्	भास्कराचार्य त्रिपाठी	नागगप्रकाशन दिल्ली,1997
3	लघुसिद्धान्त–कौमुदी	डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी आचार्य	विश्वविद्यालय प्रकाशन चौक वाराणसी षष्ठम् संस्करण–2006
4	उन्मतराघवम्	डॉ0 अरूणा शर्मा	निर्मल पब्लिशन्स कबीर नगर दिल्ली, प्रथम संस्करण–2006
5	तैतिरीयोपनिषद्	डॉ0 एच.एन.यादव	विश्वविद्यालय प्रकाशन, आगरा
6	साहित्य दर्पण	श्री विश्वनाथ कविराज	मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली–षष्ठम् संस्करण–1970
7	नाट्यशास्त्रम्	श्री भरतमुनि	हरीश प्रकाशन मंदिर, नवीन संस्करण
8	स्वप्नवासवदत्तम्	महाकवि भास	महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा–2 नवीनतम संस्करण
9	मुद्राराक्षसम्	श्री विशाखदत्त	साहित्य भण्डार सुभाष बाजार मेरठ
10	उत्तररामचरितम्	महाकवि भवभूति	महालक्ष्मी प्रकाशन,आगरा–2

11	दशरूपकम्	श्री धनंजय	साहित्य भण्डार सुभाष बाजार मेरठ
12	शब्दकोश	वामन शिवराम आप्टे	कमल प्रकाशन नई दिल्ली, नवीन संस्करण
13	सीताभ्युदयम् नाट्कम्	रामजी उपाध्यायः	चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी, 1998
14	मध्यमरामचरितम् नाट्कम्	कृपाराम त्रिपाठी	प्रकाशाधीन
15	शम्बूकाभिषेकम् नाट्कम्	रामजी उपाध्याय	भारतीय संस्कृति संस्थान वाराणसी, 2001
16	प्रशान्तराघवम् नाट्कम्	मिश्रोऽभिराजराजेन्द्र	वैजयन्त प्रकाशन इलाहाबाद
17	समाजशास्त्र	एस0के0चौधरी	उपकार प्रकाशन आगरा, 1987
18	समाजशास्त्रीय परिवर्तन	एस0के0चौधरी	उपकार प्रकाशन आगरा, 1987
19	अमरकोषस्य वातायनात्	डॉ0 रमा दुबलिश	विधानिधि प्रकाशन दिल्ली, नवीन संस्करण
20	काव्यात्म मीमांसा	जयन्तमिश्र	चौखम्भा विद्या भवन वाराणसी, 1964